हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ratan Deep Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): _____

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या **1** और **5** अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

प्रयास अच्छा है
उत्तरों में और गहराई अपेक्षित

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 121½ टिप्पणी (Remarks): सतत अध्ययन अपेक्षित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिन्दी

हिन्दी भाषा के तकनीकी विकास के क्रम में निरन्तर अनेक प्रयास किये गये। इन्हीं विकासों के क्रम में यूनीकोड का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

यूनीकोड द्वारा हिन्दी भाषा के कम्प्यूटीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। इसके द्वारा हिन्दी भाषा के सभी अक्षरों को सुलभतापूर्वक अंकित किया जा सकता है।

हिन्दी के सभी वर्णों के कूट जोन की समस्या एवं उचित सॉफ्टवेयरों के अभाव जैसे मुद्दों का हल इसके माध्यम से प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल मानी जा सकती है।

3/10

यूनीकोड के समान ही अन्य तकनीकी विषयों पर हिन्दी भाषा की समृद्धता, निरन्तर तकनीक के विकास, इसकी एवं इसके अपनाये जाने के उच्चदर से ही संभव हो सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन में अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन विद्वानों में जयन्त विष्णु नार्लीकर एवं गुणाकर मुले जैसे व्यक्तित्वों का उल्लेख किया जा सकता है।

जयन्त विष्णु नार्लीकर जी ने हिन्दी में अनेक पुस्तकों की रचना की। विज्ञान के गूढ़ समझे जाने वाले तथ्यों को उन्होंने सरल एवं सहज भाषा में पाठकों को उपलब्ध कराया।

'ब्रह्माण्ड की रचना', 'धूमकेतु', 'तारों की जीवन-गाथा'

कम्प्यूटर पर भी उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की। उनकी लिखी कई पुस्तकों को राज्य सरकारों द्वारा अपने पाठ्यक्रमों में शामिल भी किया गया।

इसके अतिरिक्त अपने व्याख्यानों, आल इण्डिया रेडियो पर अपने साक्षात्कारों के माध्यम से उन्होंने न केवल विज्ञान के प्रति जनमानस में रुचि उत्पन्न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything except the question number in this space)

की बल्कि इस तथ्य को भी स्थापित किया कि हिन्दी भाषा प्रचलित धारणा के विपरीत विज्ञान जैसे विषयों के पठन-पाठन में पूर्णतः सक्षम है।

आज आवश्यकता है कि इन विद्वानों की विरासत को संरक्षित समृद्ध बनाने का प्रयास जारी रखा जाये।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण के प्रयास मुख्यतः निजी क्षेत्र द्वारा 1970 के दशक के बाद प्रभावी रूप से प्रारम्भ किये गये।

डी.सी.एम. नामक कम्पनी द्वारा इस दिशा में शुरुआती प्रयास किये गये। कई अन्य कम्पनियों द्वारा भी अनेक सॉफ्टवेयरों का विकास किया गया।

इन कम्पनियों के प्रारम्भिक प्रयासों में एक मुख्य कमी 'की बोर्ड' से सम्बन्धित थी। इन लेखन कुंडियों में रोमन लिपि का ही प्रयोग किया जाता था। इससे हिन्दी की कई मात्राएँ एवं अक्षर पूर्णतः लिखे नहीं जा सकते थे।

कालान्तर में हिन्दी राजभाषा विभाग के तकनीकी प्रभाग एवं निजी क्षेत्र के सम्मिलित प्रयासों से ऐसे कुंजी पटलों का विकास सम्भव हो गया जो हिन्दी भाषा के लिए पूर्णतः सक्षम थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यद्यपि हिन्दी में आज भी सिस्टम साफ्टवेयर उपलब्ध नही है। यदि जापानी भाषा में सिस्टम साफ्टवेयर बनाया जा सकता है तो हिन्दी में क्यों नही? इस दिशा में अधिक खोज एवं अनुसंधान की आवश्यकता है।

4½/10

गहराई लाएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

विकारी पद :-

वे पद जिनमें लिंग, वचन, काल के अनुसार परिवर्तन होने पर परिवर्तन होता है। ये संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण के रूप में जाने जाते हैं।

उदा- सीता दौड़ती है।
राम दौड़ता है।
लड़के दौड़ते हैं।

अविकारी पद :-

वे पद होते हैं जिनमें लिंग, वचन, काल इत्यादि में परिवर्तन होने पर भी उनके स्वरूप में परिवर्तन नहीं होता है।

ये क्रिया-विशेषण, सम्बोधन इत्यादि के रूप में जाने जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उदा.   सीता बहुत तेज दौड़ती है

राम बहुत तेज दौड़ता है।

लड़के बहुत तेज दौड़ते हैं।

विस्तार करें

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

मानक हिन्दी की वाक्य संरचना प्राय: संस्कृत की वाक्य संरचना पर आधारित है। इसमें वाक्य संरचना का क्रम निम्नलिखित होता है।

कर्ता + कर्म + क्रिया

हिन्दी की वाक्य संरचना, अंग्रेजी की वाक्य संरचना से भिन्न होती है। अंग्रेजी की वाक्य संरचना में –

कर्ता + क्रिया + कर्म

का क्रम रखते हैं।

उदा- He goes to school.
He = कर्ता, goes = क्रिया

वह विद्यालय जाता है
वह = कर्ता, जाता है = क्रिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संस्कृत से तुलना करने पर—

रामः कन्दुकेन क्रीडति   ते कन्दुकेन क्रीडन्ति

कर्ता   कर्म   क्रिया

वे गेंद से खेलते है

कर्ता   कर्म   क्रिया

इस प्रकार मानक हिन्दी की वाक्य संरचना में कर्ता + कर्म + क्रिया का क्रम पाया जाता है।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

सामान्यरूप से देवनागरी लिपि को एक वैज्ञानिक लिपि के रूप में स्वीकार किया जाता है। यद्यपि इसके कुछ दोषों पर भी विद्वानों में आपत्तियाँ की है।

→ कुछ विद्वानों का मानना है कि 52 वर्णों के साथ हिन्दी की वर्णमाला बहुत लम्बी है। रोमन लिपि में केवल 26 अक्षर ही है।

→ मात्राओं की व्यवस्था की वैज्ञानिकता पर भी सवाल उठाये जाते हैं। उदाहरणस्वरूप इ, ई की मात्रा का प्रयोग कहाँ और कैसे हो, इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक नियम नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न क्र्या के अतिरिक्त कुछ लिखें।
ease do not write ything except the estion number in s space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ अनुस्वार एवं अनुनासिक के प्रयोग को भी एक सुव्यवस्थित परम्परा के स्थान पर प्रयोग की उपलब्धि के स्वरूप में स्वीकारा एक दोष माना जाता है।

→ क्ष, त्र, ज्ञ जैसे अक्षरों की उत्पत्ति एवं अयोगिता पर सवाल उठाये जाते हैं।

→ ऐसा भी कहा जाता है कि हिन्दी वर्णमाला में कई वर्णाक्षर ऐसे हैं, जिनका कोई उपयोग नहीं है, फिर भी उन्हें वर्णमाला में स्थान दिया गया है।

→ एक आरोप यह भी है कि हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों को सीखना प्रायः दुरूह है। बच्चों के लिए इसे सीखना और भी कठिन कार्य हो जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

=> कुछ अक्षरों के प्रयोग में असमंजस की स्थिति बनी रहती है। यथा ख एवं ख तथा भ, भ का अन्तर

यद्यपि उपरोक्त कमियों को सुधारने का प्रयास निरन्तर जारी है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन सहित अनेक विद्वानों ने भी अनेक सुधारों को सुझाया है यथा गुजराती धुड़ी का भ में प्रयोग, अनुस्वार एवं अनुनासिक के नियमों को वैज्ञानिक बनाना।

इन प्रयासों से देवनागरी लिपि निरन्तर वैज्ञानिक बन रही है।

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

हिन्दी की लिंग व्यवस्था प्राय: संस्कृत पर ही आधारित रही है। यद्यपि हिन्दी में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह रहा है कि यहाँ केवल पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग को ही स्वीकारा गया है, संस्कृत के नपुंसकलिंग को नहीं।

हिन्दी के पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए निम्नलिखित नियमों का सहारा लिया जाता है।

> बालक + इका = बालिका
> ग्वाल + इन = ग्वालिन
> ठाकुर + आइन = ठकुराइन

पुल्लिंग ↑   स्त्रीलिंग ↑

एकवचन के स्वरूपों का पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में परिवर्तन प्राय: उपरोक्त नियमों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तहत किया जाता है।

इसके साथ ही परम्परा के साथ विकसित स्वरूपों को मान्यता दी गई है। निर्जीव वस्तुओं का प्रयोग की सहजता के आधार पर निर्धारण किया गया है।

सभी नक्षत्र, तारे, ब्राह्माणीय पिंडों नदियों इत्यादि को स्त्रीलिंग के रूप में स्वीकारा गया है।

यद्यपि हिंदी की लिंग व्यवस्था में कई बाद कुछ समस्याएँ भी देखने को मिलती है यथा- सेनापति, राष्ट्रपति जैसे शब्द पुल्लिंग सूचक है, परन्तु इन पर काबिज व्यक्ति महिला भी हो सकती है।

लिंग व्यवस्था के स्वरूप को विस्तार सुधारो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के प्रभाव जारी है। अपने वर्तमान स्वरूप में यह सुस्पष्ट स्वरूप तक पहुँच चुकी है।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी के विकास में विभिन्न संस्थागत एवं व्यक्तिगत प्रयास किये गये हैं। व्यक्तिगत प्रयासों की परम्परा में किशोरीदास वाजपेयी जी ने इस दिशा में बहुमूल्य योगदान दिया है।

आपके द्वारा रचित ग्रन्थ, मानक हिन्दी एवं इसके व्याकरणीय संरचना को व्यवस्थित रूप देने में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

हिन्दी को प्राकृत से नहीं संस्कृत से निकट बताया।

हिन्दी व्याकरण के समुचित प्रयोग मानक भाषा में मात्राओं की व्यवस्था, अनुनासिक के प्रयोग तथा स्तरीय हिन्दी भाषा पर आपके विचारों के कारण हिन्दी के मानक स्वरूप के विकास में मदद मिली।

'हिन्दी शब्दानुशासन' ग्रंथ

आपके सांगठनिक प्रयासों के कारण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाषा हिन्दी क्रमशः समृद्ध एवं सम्पूर्ण हुई।

और गहराई लाएँ

7/15

हिन्दी की बोलियों का विवेचन एवं उनमें एकरूपता की खोज

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि की व्युत्पत्ति और विकास पर नई दृष्टि से प्रकाश।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। अपेक्षित वर्णों, मात्राओं की व्यवस्था एवं प्रयोग की सहजता की दृष्टि का से भी यह एक महत्वपूर्ण लिपि है।

देवनागरी लिपि में मात्राओं की व्यवस्था इसे रोमन लिपि से बेहतर सिद्ध करती है। उदा स्वरूप- रोमन लिपि में मात्राओं के स्थान पर अन्य अक्षरों का प्रयोग किया जाता है।

अमेरिका — AMERICA

यदि यह व्यवस्था देवनागरी लिपि में अपनाई जाती तो न केवल शब्द लम्बे होते बल्कि उनकी संरचना भी जटिल एवं दुरूह हो जाती - अमेरिका

इसके साथ ही देवनागरी लिपि में उच्चारण की व्यवस्था का व्यवस्थित स्वरूप

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पाया जाता है। कंठ, तालु, ओष्ठ इत्यादि से ध्वनित होने वाले शब्दों की एक वैज्ञानिक व्यवस्था पायी जाती है।

जबकि रोमन लिपि में ऐसी कोई सुव्यवस्थित संरचना दिखाई नहीं देती है।

उदा: BUT - उच्चारण बट
PUT - उच्चारण पुट

देवनागरी लिपि में अनुस्वार, अनुनासिक इत्यादि के माध्यम से समानार्थी प्रकट होने वाले शब्दों में भी भिन्नता बनाये रखे जा सकती है।

इसीप्रकार देवनागरी लिपि में 52 वर्णों के माध्यम से शब्दों को भली प्रकार प्रकट व्यक्त करने एवं उनके उच्चारण से सम्बन्धित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रावधानों की एक सम्पूर्ण वैज्ञानिक व्यवस्था के दर्शन होते है।

गहराई लाएं
मॉडल उत्तर देखें

8/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान संख्या के अतिरि न लिखें।
(Please do not anything exce question numb this space)

हिन्दी की लिंग व्यवस्था में केवल दो ही लिंग स्वरूपों को मान्यता दी गई है।

संस्कृत की परम्परा में तीन लिंग स्वरूपों पुलिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग को स्वीकार किया गया है। हिन्दी में नपुंसकलिंग स्वरूप को स्वीकार नहीं किया जाता है।

कई बार निर्जीव वस्तुओं के लिंग स्वरूप के निर्धारण को लेकर समस्या उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण स्वरूप – बस को स्त्रीलिंग एवं ट्रक को पुलिंग माना जाता है।

इसी प्रकार प्रमुख पदों पर आसीन व्यक्तियों के लिंग से जुड़ी समस्याएँ भी विद्यमान हैं। राष्ट्रपति वैसे तो पुलिंग स्वरूप का शब्द है परन्तु महिला राष्ट्रपति के लिए भी राष्ट्रपति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्द ही प्रयुक्त होता है।

इसी प्रकार आत्मा, नदी, ग्रह, नक्षत्र, सितारे इत्यादि के सम्बन्ध में भी कई बार लिंग निर्धारण सम्बन्धी समस्याएँ उभर आती हैं।

वस्तुतः हिन्दी में लिंग-निर्धारण एक परम्परा के तहत विकसित हुआ है। इसका सुस्पष्ट वैज्ञानिक आधार नहीं रहा है। यद्यपि इस सम्बन्ध में अनेक प्रयास किये गये हैं।

अनेक निर्जीव ~~स~~ वस्तुओं को एक श्रेणी में माना जाता है। पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए इका, इया, इन इत्यादि का प्रयोग कर एक वैज्ञानिक स्वरूप देने का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयास किया गया है।

उदा-

बालक + इका = बालिका

ग्वाल + इन = ग्वालिन

इन निरंतर प्रयासों से हिन्दी की लिंग व्यवस्था का स्वरूप निरंतर सुस्पष्ट हो रहा है।

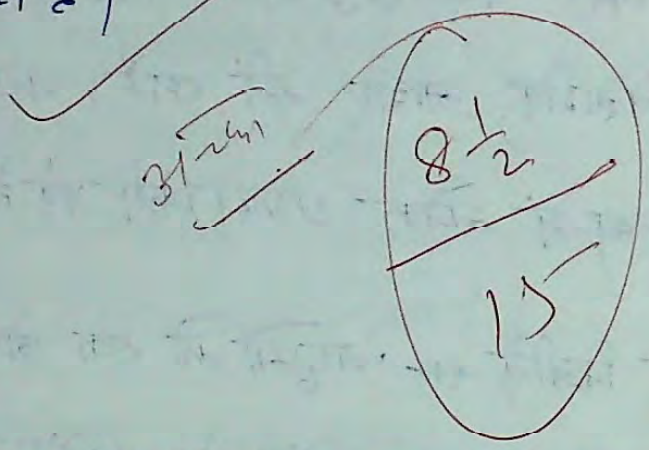

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निर्माण की दृष्टि से हिन्दी शब्द के तीन प्रकार देखे जा सकते हैं।

हिन्दी शब्द (निर्माण की दृष्टि से)

~~यौगिक शब्द~~ - रूढ़ शब्द ⇒ वे शब्द जो किसी विशेष वस्तु, संदर्भ के लिए स्थायी रूप से उपयोग किये जाते हैं। इनका अर्थ नहीं लगाया जाता है। उदा- कुर्सी, मेज इत्यादि

योग शब्द : वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बनते हैं एवं इनका सम्मिलित अर्थ मिलकर नये शब्द के अर्थ को परिभाषित करता है।

उदा - 'विद्यालय (विद्या + आलय)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

योगरूढ़ शब्द :- वे शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बनता है, परन्तु इनका अर्थ किसी विशेष संदर्भ के लिए रूढ़ हो जाता है।

उदाहरण => पंकज → इसका अर्थ है कीचड़ में उत्पन्न होने वाला परन्तु यह 'कमल' के अर्थ के लिए रूढ़ हो गया है।

स्रोत की दृष्टि से - चार प्रकार

- तत्सम शब्द
- तद्भव शब्द
- देशज शब्द
- विदेशज शब्द

तत्सम शब्द -

वे शब्द जो सीधे संस्कृत की परम्परा से लेकर उपयोग किये जाते हैं। उदा- कार्य

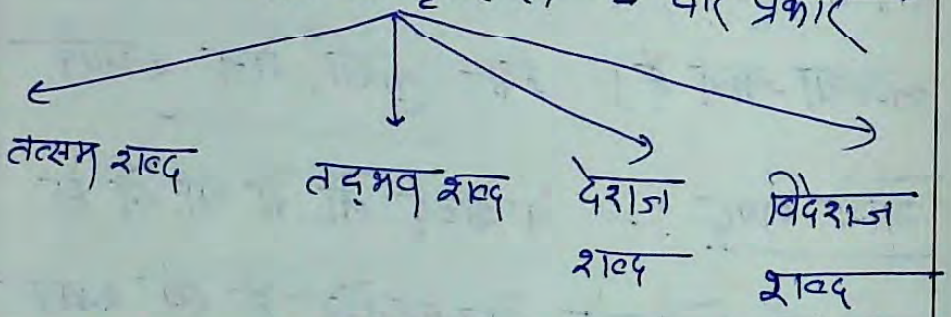

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तद्भव शब्द :

वे शब्द जो तत्सम शब्दों का हिन्दी रूपान्तरण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

उदा - कार्य → काम
प्रातःकाल → सुबह

देशज शब्द —

वे शब्द जो स्थान विशेष पर प्रयुक्त होते हैं।

उदा - टलमल, दूह (अवधी)

विदेशज शब्द —

वे शब्द जो विदेशी भाषाओं के हैं, हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

उदा - कॉक्टर (अंग्रेजी)
मशाल (फारसी)

अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद वस्तुत: प्रयोगवाद के समान्तर चलने वाली एक धारा है। इसे नकेनवाद भी कहते हैं।

प्रपद्यवाद में तीन प्रमुख साहित्यकारों का समूह है। यह मानता है कि प्रयोगवादी कवि वस्तुत: प्रयोगवाद को प्रदर्शित नहीं करते हैं। वे तो प्रयोगशील बने रहे हैं।

नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश कुमार

प्रपद्यवादियों की मान्यता है कि वे वास्तविक अर्थ में प्रयोगवादी हैं और उन्होंने साहित्य के समीक्षकों में प्रयोग किये हैं।

यहाँ प्रयोग ही साध्य है बनाम प्रयोगवादी प्रयोग को साधन मानते हैं।

प्रपद्यवादियों ने अनेक काव्य संग्रहों को प्रकाशित किया एवं पूर्व स्थापित परम्पराओं से अलग हटकर अपनी रचनाओं को नयी दिशा देने का प्रयास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यद्यपि हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा में इसकी सीमित भूमिका ही स्वीकार की गई है।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'तारसप्तक

तारसप्तक वस्तुतः सात कवियों के एक संग्रह का द्योतक है। 1943 में अज्ञेय द्वारा प्रथम तारसप्तक का प्रकाशन किया गया था। इसमें मुक्तिबोध, केदारनाथ, नेमिचंद इत्यादि प्रमुख नाम थे।

इसमें शामिल कवियों को अज्ञेय ने 'नवीन राहों का अन्वेषी' कहा।

प्रथम तारसप्तक के प्रकाशन से ही प्रयोगवाद की शुरुआत मानी जाती है। यद्यपि अज्ञेय प्रयोगवाद नाम के प्रयोग से सहमत नहीं थे। उनका मानना था कि यह प्रयोगशीलता को दर्शाने वाले कवियों का संग्रह है।

विशेषताओं को भी उल्लेख कर दें।

1951 में द्वितीय तारसप्तक का प्रकाशन हुआ एवं इसमें अज्ञेय ने अपने प्रयोगशीलता संबंधी विचारों को भी व्यक्त किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रगतिवाद एवं नयी कविता के बीच की कड़ी के रूप में प्रयोगवाद जैसे आन्दोलन को योजित एवं पल्लवित करने की दिशा में तारसप्तक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद के चार आधार स्तम्भों में सम्मिलित सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि माने जाते हैं।

पंत के द्वारा रचित पल्लव में उल्लिखित भूमिका को छायावाद का घोषणापत्र माना जाता है। छायावाद की प्रमुख विशेषताओं का उद्गम स्रोत इस भूमिका में देखा जा सकता है।

प्रकृति का मानवीय रूप में चित्रण, प्रेम की वेदना, वैयक्तिकता की प्रबलता, अशरीरी प्रेम की ओर झुकाव जैसे तत्व छायावाद की सम्पूर्ण यात्रा में प्रमुख रूप से उभरते हैं।

पल्लव की भूमिका में प्रकृति के आश्रय रूपी तत्व को प्रमुख रूप से उभारा गया है। यही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथ्य पंत के अधिकांश काव्य में भी परिलक्षित होता है।

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) साकेत की उर्मिला

मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा रचित महाकाव्य साकेत में 'उर्मिला' का चरित्र अत्यन्त विशिष्ट है।

सामान्यतः हिन्दी साहित्य में उर्मिला के चरित्र को पर्याप्त महत्व नहीं मिल पाया था। टैगोर ने इस सम्बन्ध में एक लेख लिखा। गुप्त जी इससे प्रभावित होकर उर्मिला के चरित्र एवं उसके जीवन की महत्ता को उल्लेखित किया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' से प्रेरित गुप्तजी द्वारा साकेत के नौवें एवं दसवें सर्ग में वर्णित

राम के साथ सीता का वनवास जाना एवं लक्ष्मण के साथ ~~उर्मिला~~ का न होना उर्मिला के विरह की पराकाष्ठा है। उसे 14 वर्षों का अघोषित वनवास भोगना पड़ता है। वह अपने पारिवारिक एवं गार्हस्थिक दायित्वों के कारण लक्ष्मण के साथ नहीं जा सकी है।

इन्हीं परिस्थितियों के दृष्टिगत गुप्तजी ने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साकेत के माध्यम से उर्मिला के विरह, दुःख एवं कर्तव्यपरायणता को बड़े ही मार्मिक दृष्टि से व्यक्त किया गया है।

अन्य प्रमाण

$5\frac{1}{2}$

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

छायावाद के आधारस्तम्भों में प्रमुख महादेवी वर्मा का काव्य अपनी रहस्यानुभूति के लिएभी प्रसिद्ध रहा है।

यह रहस्यानुभूति किसी अलौकिक सत्ता के प्रति है या लौकिक दुःखों के कारण इस पर विद्वानों में मतभेद है। प्राय: विद्वान यही मानते हैं कि महादेवी के लौकिक जीवन के दुःख ही उके अलौकिक चिन्तन में परिवर्तित हो गये है।

इस रहस्यानुभूति में विरह की वेदना एक प्रमुख तत्व बन कर उभरती है। वे लिखती है -
"मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ"

महादेवी की रहस्यानुभूति छायावाद की केन्द्रीय मूल्य स्वतंत्रता एवं हदिवादी लगाव की एकाकार का परिणाम है।

एक असीम सत्ता के लिए कुतूहल का भाव भी "मेरा जब हो जायेगा असीम की सत्ता से मेल" जैसे शब्दों से सहज ही देखा जा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सकता है।

वस्तुतः यह रहस्यानुभूति छायावाद के सभी कवियों में देखी जा सकती है। महादेवी ने अपने गीतों यथा सांध्यगीत, रश्मि, नीरजा इत्यादि के माध्यम से इसकी उत्कृष्ट प्रस्तुति की है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मैथिलीशरण गुप्त के विभिन्न काव्य-ग्रंथों का आधार ग्रहण करते हुए उनकी नारी-भावना का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैथिली शरण गुप्त जी पर उनके वैष्णव संस्कारों का प्रभाव रहा है। यह उनकी रचनाओं में भी परिलक्षित होता है।

गुप्त जी की नारी दृष्टि को उनकी विभिन्न रचनाओं यथा साकेत, यशोधरा, भारत-भारती इत्यादि के माध्यम से समझा जा सकता है।

गुप्त जी एक ओर तो नारी के उस पक्ष का वर्णन करते हैं जो गार्हस्थिक प्रेम से युक्त है, वह नारी जो अपनी पीड़ा किसी से व्यक्त नहीं कर सकती है। ऐसी नारी की पीड़ा का वर्णन वे साकेत की उर्मिला के माध्यम से करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशोधरा की 'अशोधरा' की पीड़ा को भी गुप्त जी ने बड़े ही सात्विक एवं मार्मिक ढंग से वर्णित किया है।

उर्मी नारी दृष्टि एक पतिव्रता, गार्हस्थिक कर्तव्यों से युक्त, प्रेम प्रवीण नारी की है।

यद्यपि कुछ विद्वान गुप्त जी की नारी दृष्टि को आर्यवादी, अतीत के मोह से ग्रस्त एवं रोमानियत से युक्त बताते हैं।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि प्रसाद ने नारी की उदात्त भावनाओं का भारतीय समाज के संदर्भ में चित्रण किया है जहाँ नारी त्याग, समर्पण एवं प्रेम की प्रतिमूर्ति है।

जब यशोधरा "सखि ने मुझसे कहकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जोते ---- क्या मुझको पगबाधा ही पाते" के माध्यम से अपने समर्पण एवं एकनिष्ठ प्रेम को व्यक्त करती है, तो यही गुप्त की नारी दृष्टि को भी उद्घाटित करती है।

संक्षेपतः गुप्त जी की नारी दृष्टि सात्विक, प्रेमयुक्त, त्याग एवं करुणा से परिपूर्ण भारतीय नारी के चित्रण की रही है।

अच्छा

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी यात्रा-साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के प्रदेय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी यात्रा-साहित्य में राहुल सांकृत्यायन का अप्रतिम योगदान रहा है।

राहुल सांकृत्यायन स्वयं भी एक महान कोटि के घुमक्कड़ रहे हैं। वे भारत, पाकिस्तान एवं सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप सहित यूरोप के विभिन्न देशों की यात्रा पूर्ण की।

देशों का उल्लेख करें

अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा जैसे लेखों से उनके इस यायावरी प्रवृत्ति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। वे अपने जीवन में "सैर कर दुनिया की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ जिन्दगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ।" से अत्यधिक प्रभावित रहे हैं और इसे

राहुल जी ने इतिहास-भूगोल, पुरातत्व-संस्कृति, समाज, धर्म, कला-साहित्य आदि पक्षों पर लिखा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अक्षरशः अपने साहित्यिक जीवन में भी उतारा है।

राहुल जी ने हिन्दी साहित्य के अनेक उत्कृष्ट यायावरी साहित्य को अपनी लेखनी के विस्तार का माध्यम बनाया। उनके यात्रा साहित्य के विवरणों में पाठकों को जो चमत्कार का जो अनुभव उपलब्ध होता है वह अन्यत्र दुर्लभ ही है।

यात्रा-साहित्य के विभिन्न उपमानों में राहुल जी का साहित्य विशिष्ट रूप से उत्तम कोटि का है।

यात्रा साहित्य के लिए राहुल जी सदैव आधार स्तम्भ बने रहेंगे।

और गहराई अपेक्षित

मॉडल उत्तर देखें

6/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) हिन्दी रेखाचित्र के विकास में रामवृक्ष बेनीपुरी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी रेखाचित्र के विकास में अनेक साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस क्रम में महादेवी वर्मा एवं रामवृक्ष बेनीपुरी का योगदान अप्रतिम है।

रेखाचित्र की विधा को हिन्दी साहित्य में प्रमुख प्रतिमान के रूप में स्थापित करने का श्रेय बेनीपुरी जी को दिया जाता है।

अपने उत्कृष्ट कोटि के रेखाचित्रों को हिन्दी साहित्य में मानक की भाँति प्रयोग किया जाता है। एक ओर जहाँ आपके रेखाचित्र तत्कालीन समाज्यों को चित्रित करते हैं, तो कुछ अर्थों में उनका स्वरूप ऐतिहासिक भी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेखाचित्र के साथ-साथ संस्मरणों पर श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ने प्रभावी रूप से अपनी लेखनी को चलाया है।

हिन्दी साहित्य में एक प्रभावी एकांकीकार संस्मरण एवं रेखाचित्र के रचयिता की दृष्टि से रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने अमूल्य योगदान दिया है।

राइटिंग लाएँ
मॉडल उत्तर देखें

3/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation